Report

Geographical Survey of Dundlod

IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE AWARD OF MASTERS
DEGREE IN GEOGRAPHY

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE

NAWALGARH (RAJASTHAN)

PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA SHEKHAWATI UNIVERSITY,

SIKAR

SUBMITTED BY

JASAWANT SAINI M.A./M.Sc. PREVIOUS SESSION: 2021-22

विषय- सूची

1	परिचय
2	भोगोलिक स्थिति
3	भौतिक स्वरूप
4	अपवाह तंत्र
5	जलवायु
6	सिंचाई के साधन
7	सिंचाई के साधन
8	मिट्टी
9	प्राकृतिक वनस्पति
10	खनिज सम्पदा
11	जनसंख्या
12	अधिवास
13	स्वास्थय सुविधाएं
14	शिक्षा का स्तर
15	कृषि
16	प्रमुख मेले व त्यौहार
17	प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थल
18	उद्योग धन्धे
19	पशु सम्पदा
20	संचार व मनोरजन के साधन
21	परिवहन के साधन
22	ग्रामिण विकास की नवीन योजनाएं

GUIDE MAP OF DUNDLOD

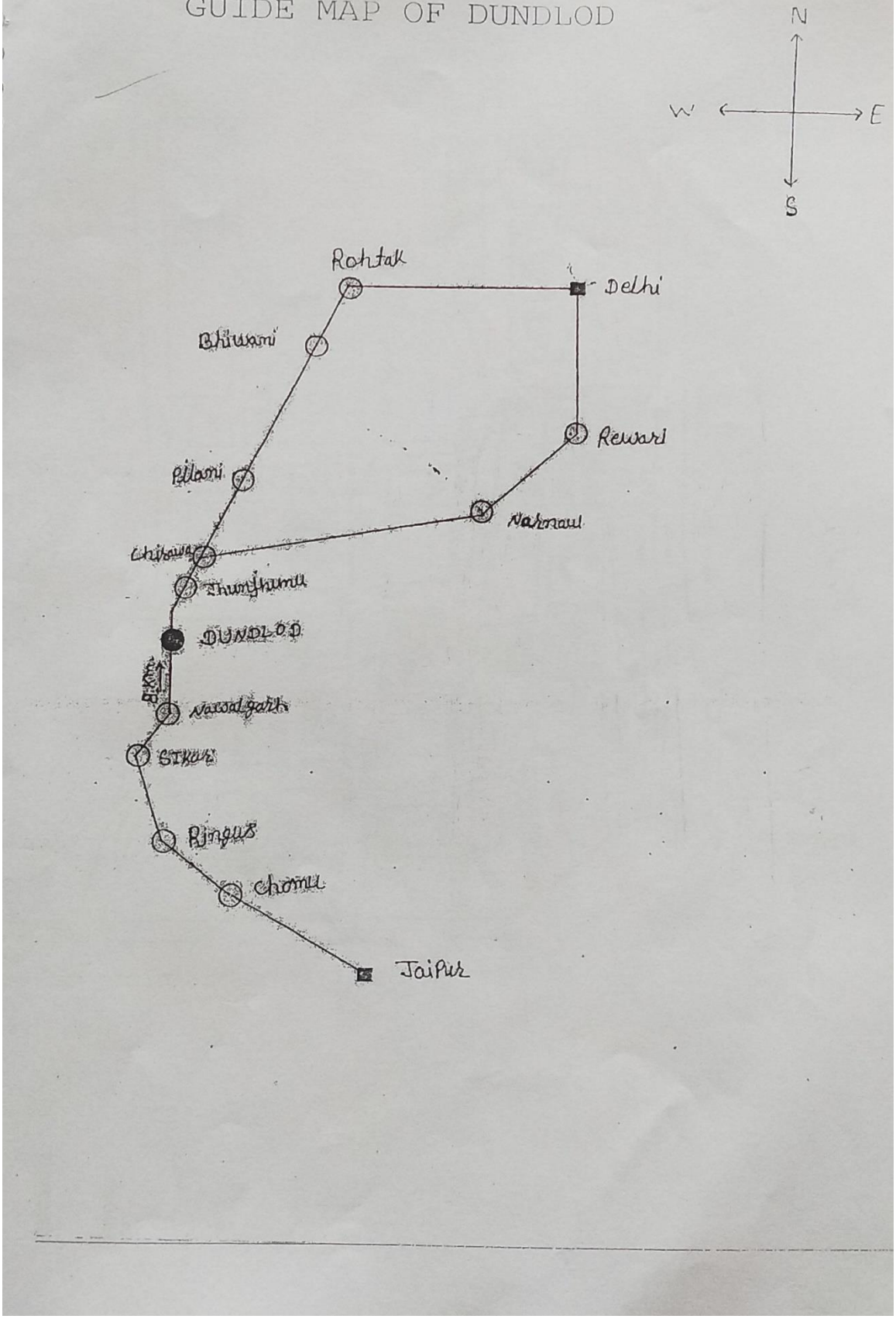

LOCATION MAP OF DUNDLODE

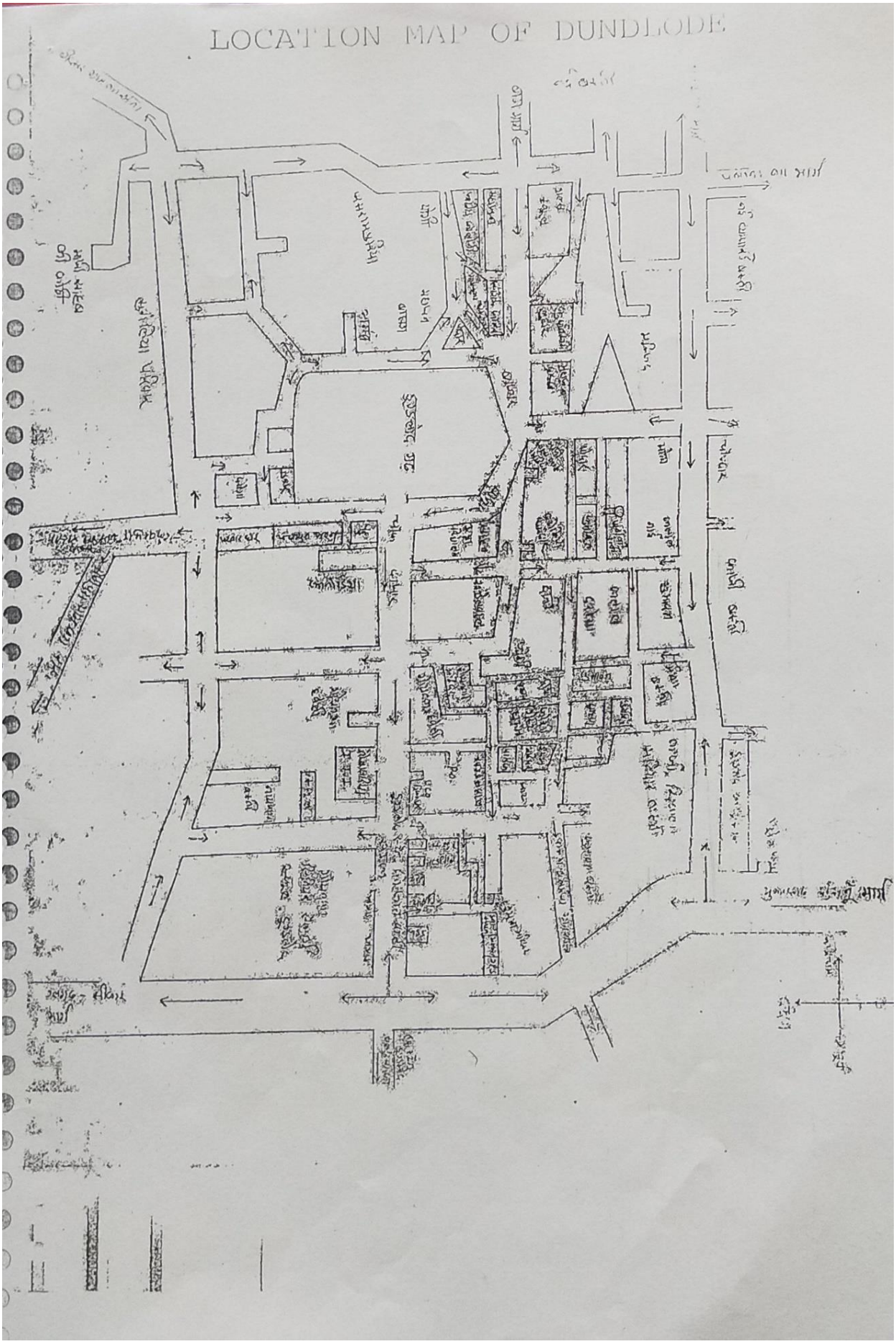

फरवरी तथा मार्च माह के तापमान का दैनिक हिसाब से निरूपण निम्न तालिका में दिया गया है।

फरवरी माह के दिन	24	25	26	27	28	29
न्यूनतम तापमान(c)	12 C	16 C	17 C	18 C	17 C	17 C
टधिकतम तापमान(c)	21 C	31 C	32 C	32 C	32 C	32 C

उपरोक्त आकड़ो का ग्राफ द्वारा प्रदर्शन निम्न से किया जा सकता है।

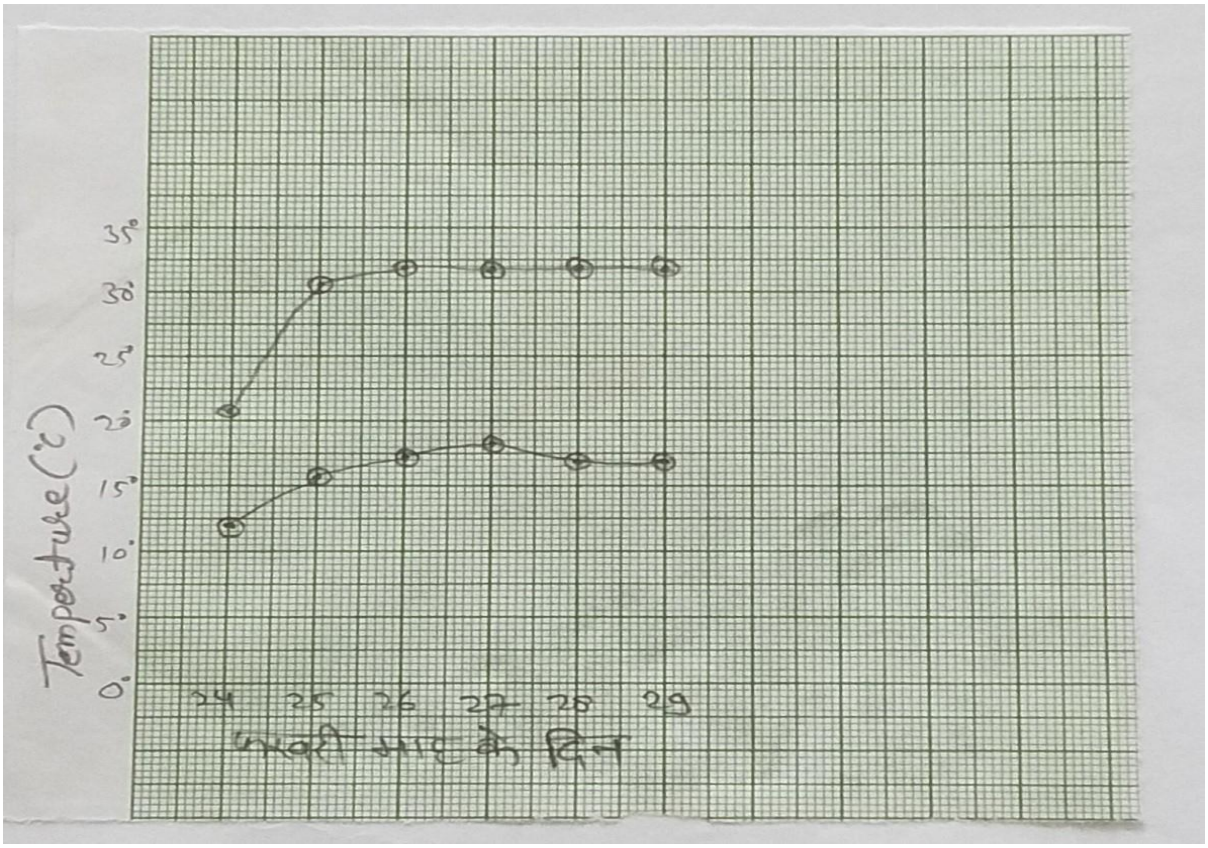

उपयोग तथा अन्य रसायनों का उपयोग किया जा रहा है। बढ़ती हुई आबादी के दबाव से मृदा अनपजाऊ खारीयकरण तथा कई अन्य समस्याओं से ग्रसित होती जा रही है इस समस्या के समाधान के लिए गाम पंचायत स्तर पर मिट्टी की बार-बार जांच व परिक्षण करवाया जाता है कषकों को मिटटी की उर्वरता बनायी रखने के लिए नई-नई तकनिकी व पद्धतियों से अवगत कराया जाता है।

कृषिः

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से रबी खरीफ की फसलें उत्पन्न की जाती है तथा गांव के आसपास छोटे पैमाने पर जायदा की फसलें भी विकसित कि जा रही है। रबी की फसल के अन्तर्गत, गेंह, जौ, सरसों, मैथी, तारामीरा तथा खरीफ की फसल के अन्तर्गत बाजरा, चोला, मुग व गवार एवं ज्वार तथा जायदा कि फसल के अन्तर्गत तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, टिन्डा, भिन्डी इत्यादि विकसीत किये जाते है वर्तमान समय में इन फसलों के उत्पादन बढाने कि लिए आधनिक तकनिकी तथा पद्वतियों पर आधारित फसले उगायी जाति है रबी की फसल अक्टुबर नवम्बर में बोई जाति है तथा मार्च, अप्रेल, में काट ली जाति है यह फसल पूर्णत सिंचाई पर आधारित है तथा सिचाई का कार्य कुए, नलकुप के द्वारा किया जाता है। खरीफ की फसल जुलाई, अगस्त में बोई जाति है तथा अक्टुबर में काट ली जाति है इस प्रकार की फसल का उत्पादन गाँव के सम्पूर्ण क्षेत्रफल पर किया जाता है। खरीफ की फसल की पैदावार वर्षा पर निर्भर है परन्तु वर्षा समय पर ना होने पर तथा वर्षा की मात्रा कम होने पर फसल को पानी की आपूर्ति सिंचाई के साधनों द्वारा की जाति है जायदा की फसल की बुआई रबी की फसल के पश्चात की जाति है ये फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित होने के कारण छोटे पैमाने पर विकसीत की जाती है।

क.सं.	गाँव	नल	नलकूप	हैण्डपम्प	कुलयोग
1	डुण्डलोद	77	23	4	104
2	कंवरपुरा	32	18	6	56
3	सैनीपुरा	22	5	7	34
	कुल	132	48	17	194

तलिका संख्या - 2

उपरोक्त आंकड़ो की सहायता से मिश्रित रेखाचित्र द्वारा इनका निरूपण किया जा सकता है:

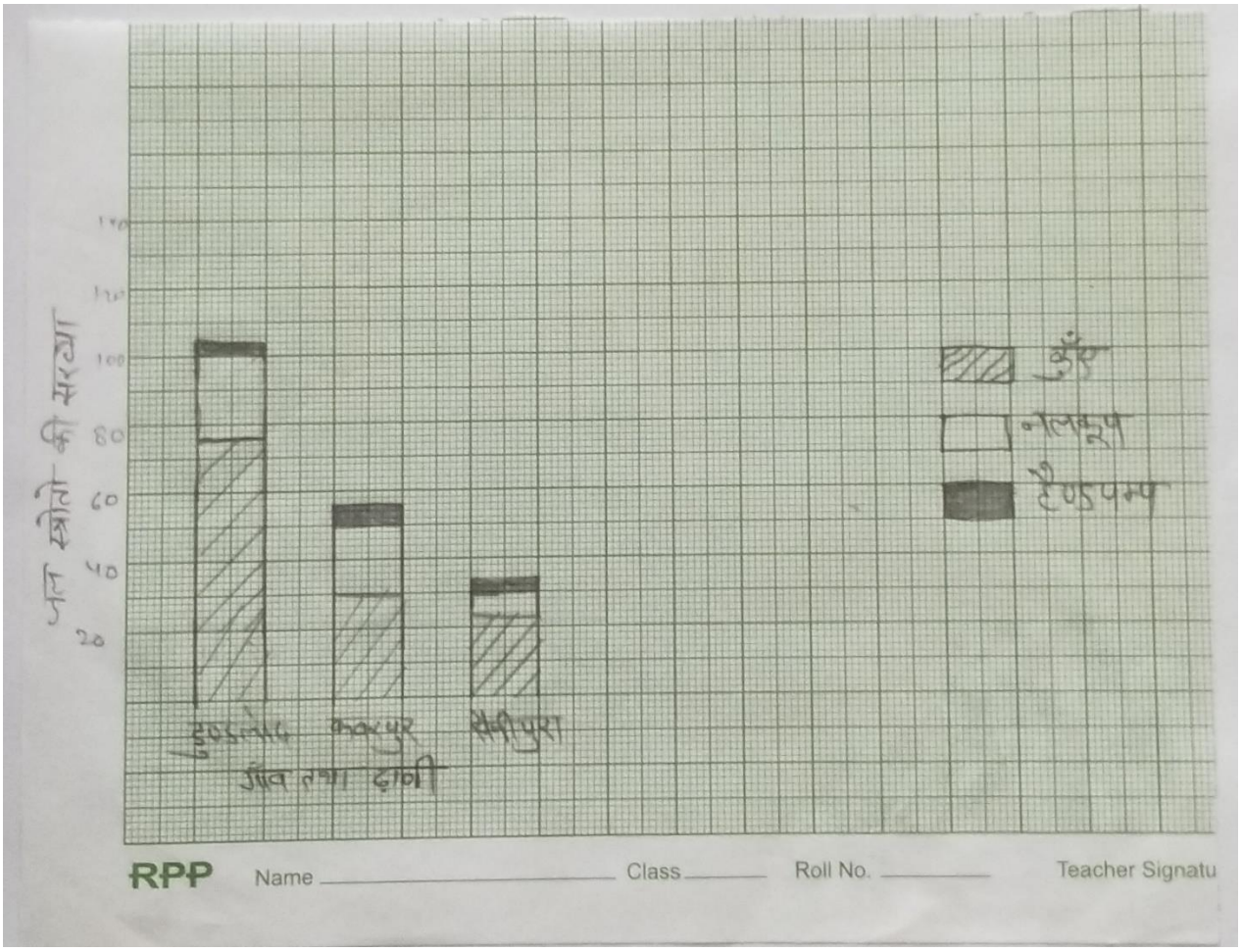

जनसंख्या :

डुण्डलोद गाँव में संघन जनसंख्या का जमाव पाया जाता है आबादी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण अधिक तथा बाहरी भागों में (खेतों में) जनसंख्या का वितरण कम है यहां की कुल जनसंख्या 10310 है जिनमें से एस.सी के लोग 1173 एस.टी के 195 तथा अन्य लोगो की संख्या 8942 है। इस गाँव में पाई जाने वाली जनसंख्या का वितरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है :

तलिका संख्या 3

क्र.स.	गाँव का नाम	S.C	S.T	अन्य लोग	कुल जनसंख्या
1	डुण्डलोद	1157	195	7876	9228
2	कवरपुरा	-	-	328	326
3	सैनीपुरा	16	195	740	757
	योग	1173	195	8942	10310

उपरोक्त जनसंख्या के आंकड़े को मिश्रित दण्ड आरेख द्वारा दर्शाया जा सकता है ।

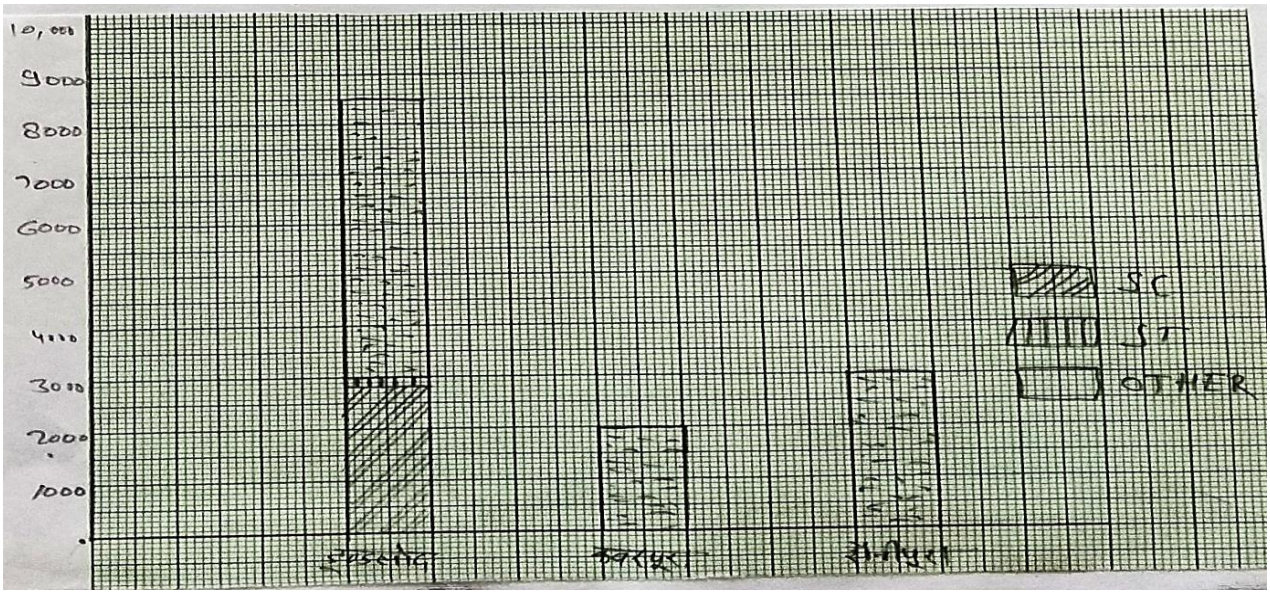

अधिवासः

डूण्डलोद गाँव में अधिवासों का प्रमिरूप चौक पटटीनमा है। इसके साथ-साथ कुछ घर तीरनुमा प्रतिरूप का मिक्षित प्रतिरूप में भी बसे हुए है। डुण्डलोद बस स्टैण्ड से डूण्डलोद गढ़ तक सीधा मार्ग है तथा इस मार्ग के दोनों किनारों पर घर बने हए हैं तथा मस्जिद डण्डलोद गढ़ हवेलियों तथा ग्राम पंचायत के चारों और वृताकार रूप में घर बने हए हैं अधिकांश घर सीमेन्ट कंकरिट तथा लोहे के मिश्रण से निर्मित पक्के अधिवास है परन्तु कुछ संख्या में गरिबी रेखा से निचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या 115 है जिनके घर कच्ची ईटों से निर्मित है इस गांव में 1 मंजिल से लेकर बह मंजिल तक इमारते बनी हई हैं। यहां की हवेलियां, गढ़, छतरियां तथा मन्दिर पुरानी तकनीकों विधियों पर आधारित है जिनकी चित्र शैली ओर विधि शैली अद्भुत है जलवायू का घरों की बनावट तथा प्रकार में विशेष ध्यान रखा गया है। गांव में 20 प्रतिशत पक्के मकान 15 प्र

प्रतिशत अर्द्व पक्के मकान तथा 5 प्रतिशत कच्चे अधिवास निर्मित है। तथा डूण्डलोद गांव में कोई भी अधिवास योग्य नहीं स्वीकृत हुआ है यह स्थिति वर्ष 2015-16 में फरवरी माह तक की है।

उपरोक्त आरेक्त द्वारा स्पष्ट होता है कि डण्डलोद ग्राम में एस.सी एस.टी. तथा अन्य की संख्या शून्य है एवं सैनीपुरा गाँव में एस.सी. की संख्या 16 एस.टी. शून्य तथा अन्य की 741 है इस आरेख के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डूण्डलोद गाँव में सर्वाधिक जनसंख्या पाई जाति है जिसका प्रमुख कारण यहां पर कृषि सुविधाओं एवं चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता है तालिका संख्या 4 में ग्राम के कुल परिवारों को दर्शाया गया है:

तालिका संख्या 4

क्र.सं	गाँव का नाम	कुल परिवार	B.P.L	A.P.L
1	डुण्डलोद	2160	106	2054
2	कंवरपुरा	58	1	57
3	सैनीपुरा	262	8	254
	योग	2482	115	2365

गॉव में कुल परिवारों की संख्या 2480 है जिसमें से B.P.L115 तथा A.P.L की कुल संख्या 2365 है B.P.L परिवार सबसे कम कंवरपुरा ढाणी में है तथा सबसे ज्यादा डुण्डलोद ढाणी में पाये जाते है तथा A.P.Lपरिवार सबसे ज्यादा जिनकी संख्या 2054 है डुण्डलोद ढाणी में स्थित है तथा सबसे कम कंवरपुरा ढाणी में पाये जाते है कुल परिवारों में से B.P.L,A.P.Lबहू दण्ड आरेख द्वारा दर्शाया गया है

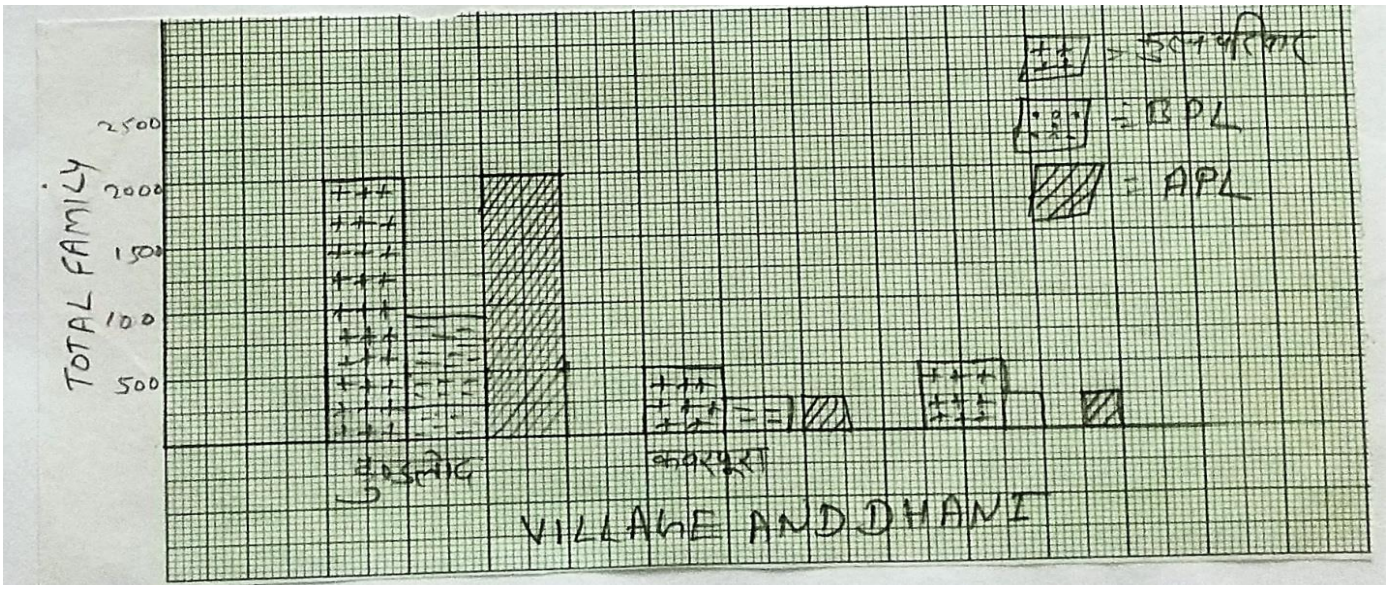

स्वास्थ्य सुविधाएं:

डूण्डलोद गांव में सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर कई स्वास्थ्य केन्द्र बने हुए है। रामचन्द्र गोयनका हॉस्पिटल में प्रतिदिन लगभग 70 मरीजों का इलाज डॉ० भास्कर बी. रावल द्वारा किया जाता है जबकि प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र में डॉ० निर्मला देवी द्वारा लगभग 50 मरिजों का इलाज व दवाई वितरित की जाती है। यहां पर टीकाकरण की भी व्यवस्था है। डूण्डलोद गांव में एक प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र, एक गोयनका निजी स्वास्थ्य केन्द्र स्थित है जहां पर प्रतिदिन मौसमी बिमारीयो का इलाज किया जाता है। डॉ0 भास्कर इस क्षेत्र का प्रमख चिकित्सक है तथा यहां पर इलाज के लिए आस-पास के लोग आते रहते है के द्वारा टि.बी. टाइफाइड व फेफड़ों से सबन्धित रोगों का निदान किया जाता पशुओं के लिए भी एक पशु चिकित्सा केन्द्र स्थापित है गाय, भैंस, ऊंट, बकरी, भेड़ का इलाज इस प्रकार किया जाता है। इस केन्द्र में टिकाकरण कृत्रिम गर्भादान तथा मौसमी बिमारीयो की रोकथाम हेतु इलाज किया जाता हैं। गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त सुविधाएं है प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 तथा उपस्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 एवं होमियोपेथिक चिकित्सालय की संख्या 1 है और इसी प्रकार पशू चिकित्सालय 1 है।

प्राकृतिक वनस्पतिः

अध्ययन क्षेत्र में प्राकतिक वनस्पति का विवरण बहुत ही कम है तथा वनस्पति की सघनता कम होने के साथ-साथ यहां पर ऊष्ण कटिबंधीय गुण वाली वनस्पति पाई जाति है। चूंकि डुण्डलोद अर्द्ध शुष्क जलवायू के अन्तर्गत स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क या अर्द्ध मरूस्थलीय वनस्पति पाई जाति है प्राकृतिक वनस्पति के विकास में जलवायू तथा मृदा का महत्वपूर्ण योगदान होता है दस क्षेत्र के अन्तर्गत खेजड़ी बबूल कंटिली झाडियां नीम, सीसम, बरगद, शहतूत, नींब, पपीता, अमरूद, इत्यादि फलों वाले पौधे भी उपलब्ध है। वर्तमान समय में यहा पर बागवानी पौधों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा हैं परिणामतः घरों तथा खेतों में बड़े पैमाने पर फलदार पौधे विकसित हो रहे हैं। यहां पतझड़ वृक्ष भी उपलब्ध है जो ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही अपने पते गिरा देते है चूंकि अध्ययन क्षेत्र में चारागाह का कोई क्षेत्र चिन्हित नहीं किया गया है।

मिट्टी:

का रंग सरंचना बनावट मूल चट्टानों की संरचना पर निर्भर करता है। इस मिटटी में पौषाक तत्वों की कमी होने पर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग द्वारा पर्ति की जाति है। डूण्डलोद गांव का कुल क्षेत्रफल 1193.98 हैक्टर है जिसमें से कृर्षि योग्य क्षेत्रफल 705.28 हैक्टर है चूंकि 55 प्रतिशत भू भाग ही कृषि योग्य है। कुल क्षेत्रफल भू भाग का 135.08 सिवायचक तथा 14042 जोहड़ के अन्तर्गत शामिल है। अतः कल भमि का 10 प्रतिशत भाग बिना उपयोग के मार्गों तथा जोहड़ के रूप में पड़ा हुआ है। मरूस्थलीकरण की प्रकिया द्वारा अध्ययन क्षेत्र की मृदा अनूपजाऊ होती जा रही है।

सघन कृषि के कारण मृदा में निरंतर पौषक तत्वों में कमी आ रही है। इस कमी को दूर करने के लिए रासयनिक उर्वरको, जैविक व गोबर की खाद का

उत्पन्न कराने के काम आता है इस गौशाला में देशी-विदेशी नस्ल की गायें स्थित है। गायों को खाने के लिए मूंगफली, गेहूं तथा जौ का चारा व चूरी पशू आहारों को उपयोग में लाया जाता है। मौषमी बिमारीयों के द्वारा कभी-कभी गायों की मौत हो जाती है तथा पशु चिकित्सों द्वारा समय-समय पर इलाज करवाया जाता है। हरयाणवी नस्ल की पर्याप्त मात्रा में भैंसे उपलब्ध है। घौड़ा प्रजनन केन्द्र में 60 घोड़े है इनको खाने के लिए चना, जौ तथा चारा खिलाया जाता है तथा विभिन्न रोगो के निवारण के लिए समय-समय पर पशु चिकित्सकों द्वारा जांच भी करवायी जाती है। इस अश्व केन्द्र का निर्माण कर्नल राघवेन्द्र सिहं द्वारा करवाया गया था। इन घोड़ों को खाने के लिए हरा चारा तथा शुखि घास एवं कमजोर घोड़ो को गुड़, तेल एवं नमक दिया जाता है। इस केन्द्र में मारवाड़ी नस्ल के घोड़े जाते हैं। तथा यहां से विदेशो में (अमेरिका) भेजे जाते है। इन्हें विभिन्न कार्य के लिए उपयोग में लेते है। जैसे नाचने में कोहिनूर व शिवराजल है। धावक में शेरा है। तथा इसकी स्पीड 25 किमी प्रति घंटा है। घोड़ों को बिमारी में पेट दर्द होता है। जिसके कारण इनकी मौत हो जाती है। इनकी दवाईयां फिटोफेन, मेलाफेन व रिमान्टफेल है।

खनिज सम्पदाः

वर्तमान समय में डूण्डलोद गांव में किसी प्रकार के खनिज का विशेष तौर पर खनन नहीं किया जा रहा है। नई खोजों तथा शोधकार्यों के आधार पर इस क्षेत्र में खनिज उपलब्ध होने की सम्भावनस हैं।

गोयनका हवेली का म्यूजियम प्राचिन परम्पराओं तथा वेशभूषा एवं अन्य कार्यो के लिए विचित्र शैली में बना हुआ है यहां श्याम मंदिर, ठाकुर जी का मंदिर, संतोषि माता का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर तथा पोलो ग्राउण्ड इत्यादि महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल तथा धार्मिक तिर्थ स्थल है। इन सामारिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए हजारों विदेशी सैलानी आते रहते हैं।

शिक्षा का स्तर:

डूण्डलोद गांव में शिक्षा की दृष्टि से अच्छा वातावरण बना हुआ है प्राचिन काल से ही यहां पर शैक्षणिकविधार्थियों के लिए उतम गुणों के छात्रावासो की व्यवस्था बनी हुई हैं। दृष्टि से गोयनका सीनीयर सैकण्डरी स्कूल संचालित थी। इसका निर्माण डूण्डलोद के प्रसिद्ध सेठ रामचन्द्र गोयनका द्वारा करवाया गया था। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है यहां सी.बी.एस. सी से मान्यता प्राप्त 4 स्कूल तथा दो डिग्री कॉलेज एक पोला टेकनिकल कॉलेज, 9 मीडिल स्कूलों, दो आई.टी.आई कॉलेज, 2 बी.एड कॉलेज, 12 प्राईमरी स्कूल निजी क्षेत्र तथा सरकार द्वारा संचालित है इसके अतिरिक्त शेखवाटी क्षेत्र की प्रमुख इंजिनियरिंग कॉलेज भी शामिल है यह क्षेत्र डिग्री , शिक्षा तथा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा में भी अग्रणी बना हुआ है इसी कारण क्षेत्र में आस-पास लोग आकर अध्ययन करते है तथअध्ययनरत हैं।

डूण्डलोद गाँव के वार्ड नम्बर 3 में सर्वेक्षण के आधार पर कोई भी बड़ा उधोग धन्धा नही था। यह मुस्लिम मोहल्ला होने के कारण छोटी-छाटी चुड़ियों की दुकाने तथा चूड़ियों का कार्य घरों में किया जाता है इन चूड़ियों की कीमत 1000 से 5000 रूपये तक है चुड़ियों लाख द्वारा निर्मित होति है तथा इन पर विभिन्न प्रकार की डिजाइन तथा तरासकर आधुनिक रूप दे दिया जाता है जो सुन्दरता की दृष्टि से अच्छी लगती है इसके साथ-साथ इस क्षेत्र में दवाईयों की दुकानें स्थित है। गाँव में एक ऑयल मिल भी स्थित है वह भी वतैमान समय में बंद की स्थिति में हैं।

पशु सम्पदाः

डूण्डलोद गाँव पशु सम्पदा की दृष्टि से शेखावाटी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है, यहां पर उतम नस्ल की गाये, भेड़, बकरी, ऊट, गधे पाये जाते है। डूण्डलोद गांव का अश्व प्रजनन केन्द्र तथा कामधेनू गौशाला अपना विचित्र स्थान लिये हुए है कामधेनु गौशाला की स्थापना वर्ष 2008-09 में बुद्धगिरी ट्रस्ट फतेहपुर द्वारा किया जाता है। यह गौशाला 40 बिघा क्षेत्र में फैली हुई है। इस गौशाला में एक ट्यूबवैल व नलकुप बना हुआ है जा गायो को पानी तथा चारा

प्रमुख मेले व त्यौहार:

डूण्डलोद गॉव में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करजे है तथा लोगो की भिन्न-भिन्न धर्मो में आस्था होने पर यहां पर कोई प्रकार के मेले, उत्सव समय-समय पर आयोजित किये जाते है श्यामजी का मेला वर्ष 2 बार लगता है तथा गाँव में प्रतिवर्ष संताषी मां का मेला, गणगौर का मेला आदि लगते है गांव में विभिन्न धर्मो के लोगो के निवास करने के कारण यहां पर होली, दीपावली, दशहरा, रक्षा बन्धन, तीज तथा ईज, बकरीद, ताजिया आदि त्यौहार समय-समय पर मनाये जाते ळे

प्रमुख तीर्थ व पर्यटल स्थल:

डूण्डलोद गांव पर्यटन की दृष्टि से शेखवाटी में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस गांव में पर्यटन एवं ऐतिहासीक स्मारकों की दृष्टि से विभिन्न हवेलियों तथा इण्डलोद गढ़ को देखने के लिए विदेशों से बड़ी संख्या में पर्यटक आते रहते है। डूण्डलोद गांव का गढ़ मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिनके चारो ओर नहर बनी हुई है तथा यह लगभग 8 हैक्टर में फैला हुआ है इस गढ़ में विशेष तौर से दिवान खास, सूर्य घड़ी तथा दु-छता महत्वपूर्ण है। दिवान खास में राजा तथा रानीयां निवास करती थी, तथा दु-छता में अनेक भिती चित्र तथा रानीयों के सजावट की सामग्री एकत्र है। सूर्य घड़ी अब भी सामान्य घड़ियों की भांती समय का सही निर्धारण कर पाती है। इस गढ़ में कई फिल्में तथा सीरीयल बनाये गये है। राजा का बाजा, बिनणी वोट देने वाली तथा विदाई इत्यादि फिल्मों की शूटिगं की जा सकी है तथा बकरा सीरीयल भी यही से फिल्माया गया है।

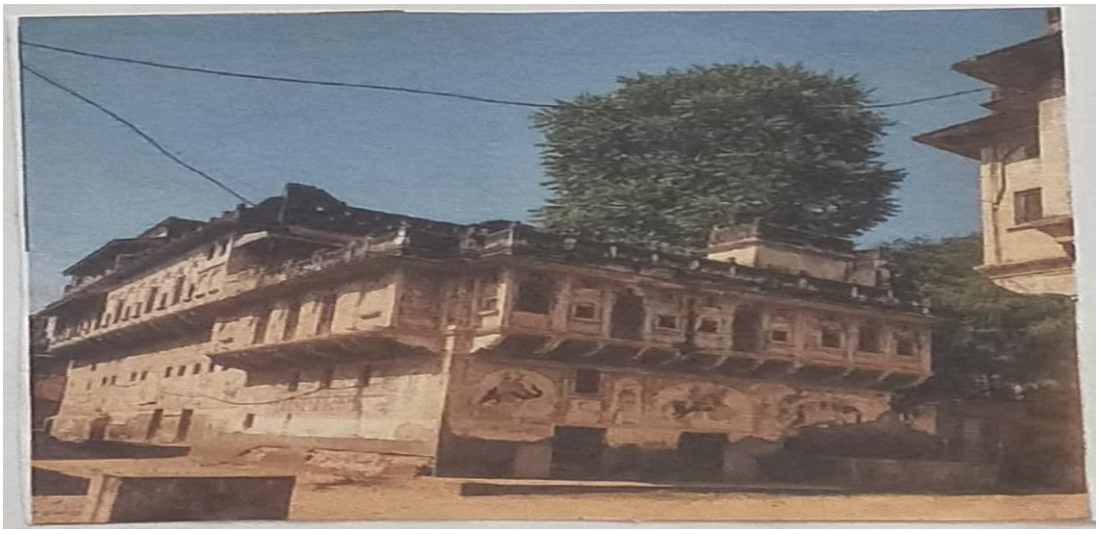

संचार व मनोरंजनके साधनः

किसी क्षेत्र के विकास का परिचायक संचार एवं मनोरंजन के साधनों पर निर्भर करता है। चूंकि डूण्डलोद गांव में 6 मोबाइल टावर जो विभिन्न कंपनियों से संबंधित है एक पोस्ट ऑफिस तथा 85 प्रतिशत लोगो के घरों में टेलीविजन

गति के संचार के साधनों में मोबाइल सुविधा उपलब्ध हैं गॉव के मध्य में मुख्य पोस्ट ऑफिस स्थित है जिसके अन्तर्गत रजिस्ट्री, स्पीड पोस्ट, सी.टी.सी. तथा मनीआर्डर की सुविधा उपलब्ध है।

व्यापार व वाणिज्यि:

गांव की अधिकांश द्वितीयक तृतीयक व्यवसायों में संलगन है। इस गांव में कषि पशु पालन आदि आधुनिक तकनीकी पर आधारित है। इस क्षेत्र के ग्रामवासी भारत के बड़े-बड़े नगरों में औधोगिक कार्यों से जुड़े हुए है यहां के सेठ, साहकारो ने गांव का विकास करके गांव में औधोगिक भू दृश्य विकसीत किया है। इस गांव में बैंकिग संचार तथा अन्य आर्थिक कार्यो में लोगों की अच्छी रूची बनी हुई है। यहां के कृषि उत्पादों में जैविक उत्पाद पर विशेष ध्यान दिया गया हैं तथा का पशु पालन (घोड़ो) अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है।

परिवहन के साधनः

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान है इनके द्वारा आवश्यक माल को मांगने, अतिरिक्त उत्पादन को बाहर भजन एव अपने क्षेत्र में नवाचारो के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। चूकि डूण्डलोद गांव सड़क व रेल परिवहन से जुड़ा हुआ है।

जयपुर-लोहारू राज्य राजमार्ग गांव की सीमा को दक्षीण से उतर दिशा की ओर स्पर्श करता हआ गजरात है जो गांव को अन्य नगरों, कस्बों, जिला मुख्यालयों तथा राजधानी से जोड़ता है। गांव के अन्दर 4 किलोमीटर पक्की सड़क (डामर युक्त), 3 किलोमीटर सीमेंट सड़क तथा 10 किलोमीटर कच्ची सड़क (ग्रेवल रोड़) है जो गांव की गलियों को गांव के चौक से तथा चौक को अन्य पड़ौसी गांवो नगरों, जिलों तथा राजधानियों से जोड़ने का कार्य करती हैं

यातायात के साधनों में यहां बस, ट्रक, जीप, कार, मोटर साईकिल, साईकिल, ऊंटगाड़ी (लगभग 15), बेलगाड़ी (लगभग 13), गधागाड़ी (लगभग 20) तथा घोड़ा गाड़ी (लगभग 5) आदि नये व पूराने तथा पुराने तथा तीव्र व मंदगती वाले यातायात के साधन विकसित है।

1. गव में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा प्रदूषण के अन्य कारको गांव का प्राकृतिक
सौन्दर्य व वातावरण पर विकरित प्रभाव पड़ने है। 2. गंव में चारागाहों के अभाव के कारण मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से
आगे बढ़ रही है। 3. वनों के अत्यधिक दोहन के कारण अध्ययन क्षेत्र की जलवायु तथा पशुओं के
लिए चारागाहों पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है। 4. अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण गांव में गरीबी का स्तर बढ़ने लगा है बी.
पी.एल तथा ए.पी.एल परिवारो की संख्या में वृद्धि होने लगी है। गांव में शराब की दुकाने, तम्बाकू व गुटखों की दुकाने जगह-जगह पर बनी हुई है। जिससे ग्रामवासियों को धुम्रपान की आदत पड़ गयी है। 5. गांव में नालियों की सफाई समय-समय पर नही के कारण गन्दगी फैलती
रहती है जिसके कारण मौसमी बिमारियों का प्रकोप बना रहता है 6. डूण्डलोद गांव में पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है जिसके कारण ग्रामवासी देशी विदेशी संस्कृति को अपनाने लगे है। फलतः भारतीय संस्कृति एवं परम्परा अपना अस्तित्व खो रही है।